



Original Article

नारी जीवन का अंतरद्वन्द्व, उसके हिस्से की धूप

रूपाली सखाराम कांबळे

सरदार बाबासाहेब माने महाविद्यालय, रहमतपूर

Manuscript ID:

IJAAR-C130363

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 322 - 325

Submitted: 04 Feb. 2026

Revised: 14 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

रूपाली सखाराम कांबळे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787065

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787065>



Creative Commons



सार:

मृदुला गर्गजी के “उसके हिस्से की धूप” उपन्यास में स्त्री पात्र का मनोवैज्ञानिक स्वरूप जो हमारे सामने आता है, वह विशिष्ट आधुनिक नारी का है। विश्व में स्त्री का सामर्थ्य व्यापक रूप में है। उन सभी का अपनी अपनी अलग सत्ता है। उनकी स्वतंत्रता भी है। परंतु हम देखते हैं की परंपरागत भारतीय समाज में स्त्री पुरुष संबंध के बीच मानवीय स्वतंत्रता खासकर स्त्री की स्वतंत्रता को हमेशा ही अनदेखा किया हुआ हमें समाज में दिखाई देता है।

मृदुला गर्ग जी का “उसके हिस्से की धूप” यह उपन्यास परंपरागत ही नहीं बल्की आधुनिकता के घिसे पीठे वैचारिक चौकट से बाहर निकल कर आधुनिक व्यवस्थापन पर अनेक सवाल उठते हैं। वह सवाल यह है कि, आधुनिक समाज व्यवस्था में स्त्री पुरुष के संबंध का आधार क्या है? इस समय में नारी की प्रेम भावना क्या है? उसकी स्वतंत्रता क्या है? स्त्री पुरुष संबंध का सत्य सिर्फ मनोगत है अथवा इसके समांतर कोई दैहिक सच्चाई भी है? साधारणतः देखा जाये तो मृदुला गर्ग जी का उपन्यास एक त्रिकोणी प्रेम कथा है। इसमें मनीषा जतीन और मधुकर यह तीन प्रमुख पात्र हैं। लेकिन प्रेम इस उपन्यास की समस्या नहीं है। समस्या है, स्वतंत्रता वही स्वतंत्रता जो स्त्री और पुरुष दोनों के लिए भी मौल्यवान होती है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

रूपाली सखाराम कांबळे. (2026). नारी जीवन का अंतरद्वन्द्व, उसके हिस्से की धूप. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 322 - 325. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787065>

प्रस्तावना:

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका मनीषा है। मनीषा और जतीन का विवाह होता है। मनीषा कॉलेज में प्राध्यापिका है और जतीन फॅक्टरी में मॅनेजर के पद पर काम करता है। दोनों भी अपनी जीवनशैली जीते रहे हैं। दोनों भी अपने अपने कामों में व्यस्त दिखाई देते हैं। जैसे लेखिका कहती है, “यु तो दोनों

का एक साथ घर के बाहर निकलना होता है” दोनों अपने कामों में व्यस्त होने के कारण दोनों ही किसी के सुख दुख में हिस्सा नहीं ले पाते हैं। उपन्यास की नायिका मनीषा आधुनिक काल की स्वतंत्र नारी के रूप में दिखाई देती है। वह स्वावलंबन से जीवन यापन करने का प्रयत्न करती है। परंतु उसका पती जतीन उससे ज्यादा अहमियत नहीं देता। सुबह सुबह दोनों भी



काम पर जाते हैं, परंतु जतिन को अपना काम मनीषा के काम से ज्यादा महत्वपूर्ण लगता है। लेखिका कहती है, “यु तो सुबह दोनों को एक साथ घर से बाहर निकलना होता है पर लगता है जैसे जतीन को ही जाना है, या शायद इसलिये की उसका जाना शौक है।” और जितने का जाना जीवन अपूर्ण।

मनीषा स्वतंत्र विचारोवाली नारी है:

परंतु जतिन उसकी स्वतंत्रता और विकास में बाधा उत्पन्न करता हुआ दिखाई देता है। किसी कारण व मधुकर नामक पुरुष पर आकर्षित होती हुई दिखाई देती है। शायद मनीषा को लगता है की, मधुकर उसकी स्वतंत्रता में बाधा न डालेगा उसके बाद मनीषा और मधुकर में प्रेम संबंध निर्माण होते हैं। उसके बाद मनीषा जतिन से तलाक लेकर प्रेमी मधुकर से शादी करती है। मधुकर से शादी करते समय मनीषा ने जो सपने देखे थे वह सपने खतम होते हैं। मधुकर शादी करने के कई दिनों बाद वही स्थिति आज आती है। जो पहले जतीन के साथ रहने में थी। मधुकर भी अपनी पत्नी के साथ साव्रतापूर्ण व्यवहार नहीं करता। मनीषा अपने जीवन का खालीपण सहन नहीं कर पाती और उसी दौरान जतिन की मुलाकात मनीषा से होती है और फिर मनीषा जतीन के प्रति आकर्षित होती है। उपन्यास की नायिका की मनोवैज्ञानिक अवस्था तथा उसकी घुटन इस उपन्यास का मूल विषय है। इस उपन्यास में मनीषा का एक ऐसा पात्र है, जिसके इर्द गिर्द उपन्यास का सारा कथानक घुमता है। मृदुला गर्ग जीने इस घुटनग्रस्त नारी मनीषा की चारित्रिक विशेषताओं का चित्रित करते हुए उसका मनोविश्लेषण किया है।

आधुनिक नारी:

मृदुला गर्ग जी के उपन्यास “उसके हिस्से की धूप” में चित्रित नायिका मनीषा आधुनिकता में पली बड़ी नारी है। वह

परंपरागत विचारों में रहना पसंद नहीं करती है। इस प्रकार समाज व्यवस्था में पुरुष को स्वतंत्रता मिलती है, उसी प्रकार उसी को भी स्वतंत्रता मिलनी चाहिये यह उसका आग्रह है। अगर वह मिल नहीं पाती तो वह बेचैन हो जाती है। जीवन का यह सुनापण खालीपण उसे काटने को दोड़ता है। उपन्यास में अपने पती जतीन से उसे प्रेम और स्वतंत्रता नहीं मिलने पर वह मधुकर नामक पुरुष के तरफ आकर्षित होती है और उससे शादी करती है।

अंतरद्वंद्व:

अंतरद्वंद्व का सामान्य अर्थ है, मन में होने वाले दो संघर्ष का विचार तथा दो विचारों का संघर्ष। इस संदर्भ में डॉ.एस व्यंकटेश्वर का कथन है, मनुष्य के अरमानों की अपेक्षा जीविका के साधन कम होती है। उसकी शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक आदी अनेक आवश्यकताओं के पूर्णों के लिए प्रति द्वंद्व पैदा होता है। जब दो परस्पर विरोधी इच्छाएँ एक साथ आगे आती हैं, तब द्वंद्व आरंभ होता है। “उसके हिस्से की धूप” उपन्यास की नायिका मनीषा के मन में मधुकर के प्रति झुकाव दिखाई देता है। परंतु संस्कार उसे अपने पती जतीन को धोका देने का पछतावा भी होता है। इस अंतर द्वंद्व में मनीषा खुद को कोसती रहती है। उसे जीवन में खालीपण लगता है।

घुटन:

प्राचीन काल से लेकर नारी का जीवन घुटन से भरा हुआ है। नारी के मन पर निरंतर किसी ना किसी पुरुष का दबाव रहता है। प्रस्तुत उपन्यास में नायिका मनीषा जतीन से शादी करती है। उनका विवाह प्रेम विवाह न होकर सगे संबंधियों ने कराया था। इसी कारण मनीषा और जतीन के शादी तथा संसारिक जीवन में मनीषा को उस प्रकार का प्यार, उस प्रकार



की स्वतंत्रता मनीषा को न मिल सकी जिसकी मनीषा को अपेक्षा थी। जतिन के साथ रहते वक्त उसे अपनी स्वतंत्रता तथा आपना खालीपन महसूस होता रहा। इसी कारण वह जतिन से तलाक लेकर मधुकर नाम के पुरुष से शादी करती है। मधुकर उससे शादी करने के बाद मनीषा ने जो स्वतंत्रता के सामने सपने देखे थे वो भी खतम हो जाते हैं और एक समय ऐसा भी आता है कि मनीषा मधुकर से अनाकर्षक होकर जतीन के प्रति आकर्षित होती हुई दिखाई देती है। इस प्रकार मनीषा के जीवन में खालीपन बराबर बना रहता है। मनीषा अपने जीवन की स्वतंत्रता बरकरार रखने तथा जीवन खालीपन कम करने के लिए किसी ने किसी पुरुष से प्रेम करके उस खालीपन को कम करने का प्रयत्न करती है। परंतु ऐसा करते वक्त कुछ थोड़े क्षण ऐसी अवश्य आते हैं जिसमें मनीषा का खालीपन कम होता है पर देखते ही देखते वह खालीपन फिर उसे सताता है। थोड़े क्षण के लिए उसे स्वतंत्रता प्रेम मिलता है, पर थोड़े ही क्षणों में वह सिकुड़कर यु सीमठ जाता है कि, उसे पता ही नहीं चलता कि वह कहा समा गया है। इस प्रकार दो पुरुष के बीच में मनीषा का जीवन यापन एक घुटन सा लगता है।

कुंठित कामवासना:

काम मनुष्य के जीवन की सामान्य प्रवृत्ति रही है। काम उत्तेजना दबाने से कुंठा की प्रवृत्ति बढ़ती है। “फ्रायड के मतानुसार” “मनुष्य के मूल शक्ति काम प्रवृत्ति है” उसके दमन में से मनुष्य कुंठाग्रस्त होता है। मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए दमन श्रेयसकर नहीं है। “उसके हिस्से की धूप” में नायीका मनीषा योवन नारी है। उसका पती जतीन फैक्टरी में मैनेजर है वह हमेशा अपने काम में दिलचस्पी लेता है। मनीषा जिस प्रकार अपने पती से कामना की अपेक्षा करती है, उस अपेक्षा में उसका पती खड़ा नहीं उतरता। फिर वह मधुकर नामक पुरुष पर

आकर्षित होती है। जतीन से जो वासना की प्रवृत्ति कुंठित हुई थी व मधुकर नामक पुरुष से पूर्ण करने का प्रयत्न करती है। ऐसा करने में उसके मन में जो वासना कुंठित भाव है वह दिखाई देता है।

जीवन की अपूर्णता:

मनुष्य अपने जीवन में जो चाहता है वह न मिलने पर उसे अपूर्णता तथा अपूर्णता का अहसास होता है। उपन्यास की नायीका मनीषा अपूर्णता में जीनेवाली पात्र है। वास्तव में मनीषा स्वतंत्रता से जीनेवाली नारी है। वह पुरुष के प्रभाव से मुक्त होना चाहती है। आधुनिक समाज के गीसे पीठे विचारों की चौकट से बाहर निकलने का प्रयास करती है। अगर वह ऐसा नहीं कर पाती तो उसे अपने जीवन में खालीपन तथा अपूर्णता महसूस होती है। अपने जीवन के खालीपन को भरने के लिए किसी न किसी पुरुष से प्रेम करती है। इस प्रेम के कारण ऐसे थोड़े क्षण आते हैं, जिसे पूर्णतः आती है। परंतु देखते ही देखते व क्षण खतम हो जाते हैं और उसके जीवन में अपूर्णता छाया रहती है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि, मृदुला गर्ग जी ने अपने उपन्यास “उसके हिस्से की धूप” में जिस नायीका मनीषा का चित्रण किया है उसके मन की लगभग सभी वृत्तियों का वर्णन किया हुआ दिखाई देता है। उन्होंने मनीषा के अंतरमन में झाँककर देखने का प्रयास किया है। उसके मन में के खालीपन द्विधा अवस्था, घुटन जीवन की अपूर्णता आदी प्रवृत्तियों का अभ्यास करके उसका मनोविश्लेषण किया हुआ है।



उपन्यास की नायिका अपनी वैयक्तिक स्वतंत्रता को हासिल करने के लिए झगड़ती रहती है। उसके लिए किसी न किसी पुरुष से प्रेम करती है और अपने जीवन में स्थिर होने का प्रयत्न करती है। और फिर भी उसे वह स्वतंत्रता न मिले तो वह बेचैन होती है। मनीषा नामक नारी का मनोविश्लेषण करने के पीछे मृदुला गर्ग जी का उद्देश्य नारियों की विशेष प्रवृत्तियां दिखाना है। और किसी परिस्थिति में कौनसा आचरण उनके द्वारा हुआ है, इसका चित्रण करना है।

मृदुला गर्गजी ने मनीषा के माध्यम से नारी जीवन की व्यथा, घुटन, अंतरद्वंद्वता आदी का वर्णन प्रामाणिक रूप से किया हुआ दिखाई देता है। मनीषा जैसी नारी अपनी वैयक्तिक स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए तथा परंपरागत गीसे पीठे वैचारिक

चौकट से बाहर निकलने के लिए कभी कभी परिस्थिति से विपरीत आचरण करती है। आतः मृदुला गर्ग जी ने उपन्यास के पात्र का चारित्रिक विकास मनोवैज्ञानिक भावभूमी पर किया हुआ दिखाई देता है।

संदर्भ:

1. मृदुला गर्ग उपन्यास - “उसके हिस्से की धूप” पृष्ठ ५९ दवी संस्करण १९९१ वही पृष्ठ ५९
2. डॉ. एस. व्यंकटेश्वर हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार पृष्ठ १७० प्र संस्करण २००२
3. डॉ. विमल सहस्रबुद्धे हिंदी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पृष्ठ २८ प्र संस्करण १९७४